Vol.7 April 2014 No.10
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण

BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

महान कर्मयोगी महात्मा हंसराज

–डॉ. सत्यपाल 'बेदार'

वि व में विश्रुत हुआ है नाम जिसका 'हंसराज',
जिसकी सेवा को भुला सकता नहीं मानव–समाज,
सर्वमंगल से सुप्रेरित जिसके थे सब काम–काज,
ला इलाज–इन्सानियत का था किया जिसने इलाज,
वह तपस्वी धन्य है, मतिमय मनस्वी धन्य है।।

जिसने जीवन–दान का व्रत था जवानी में लिया,
यज्ञमय निष्ठा के प्रति सर्वस्व अर्पण कर दिया,
गर्व का है वह विषय हर काम जो उसने किया,
वेद–अमत ही पिलाया, वेद–अमत ही पिया,
वह तपस्वी धन्य है, मतिमय मनस्वी धन्य है।।

जिस तपोनिधि ने किया संसार में विद्या का दान,
जिसने भूचालों, अकालों में भी की सेवा महान,
आर्य–प्रादे ाक सभा का बन गया था मूल प्राण,
जिसने सींचा खून से नित डी.ए.वी. का संस्थान,
वह तपस्वी धन्य है, मतिमय मनस्वी धन्य है।।

कर्मयोगी जो सदा गंभीर चिंतन–रत रहा,
जिसके मन–मस्तिष्क का आधार नित उन्नत रहा,
लोभ–लिप्सा से परे, सब भाँति जो संयत रहा,
ज्ञान के संचार औ विस्तार में उद्यत रहा,
वह तपस्वी धन्य है, मतिमय मनस्वी धन्य है।।

जो परम पुरुषार्थ एवं प्रार्थना–संदे ा था,
कृत्य ही जिसका अन वर कीर्तिमय परिवे ा था,
दे ा उसका धर्म था औ धर्म उसका दे ा था,
मन वचन औ कर्म से व्यक्तित्व वह दरवे ा था,
वह तपस्वी धन्य है, मतिमय मनस्वी धन्य है।।

हों "मुपाला–काण्ड" अथवा अग्नि काण्डों के विना ा,
ना ा–लीला बाढ़ की, या भुखमरी के नाग–पा ा,
की मदद सबकी, जहाँ पाए गए प्राणी हता ा,
वो लुटाता ही रहा सद्भावनाओं का प्रका ा,
वह तपस्वी धन्य है, मतिमय मनस्वी धन्य है।।

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF DONATION OF *Rs.500/-(Rupees Five hundred only) FROM Prof. J.L.SARDANA, DWARKA, NEW DELHI-110075. Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1961 Vide No.DIT(E)1/3313DELBE21670-2503210 dated 25.03.2010.*

It is also to request all our readers to send us their renewal subscription and also post us with their views and opinion about the articles published in our journal "BRAHMARPAN".

Brahmarpan April 2014 Vol. 7 No.10
चैत्र–वै ााख 2070 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta
V.President
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer
Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

CONTENTS

1. महान कर्मयोगी महात्मा हंसराज 2
–डॉ. सत्यपाल 'बेदार'
2. संपादकीय 4
3. सांख्य द र्न 7
–डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
4. रामराज्य की आव यकता (रामनवमी पर्व पर वि ोष) 8
–नरेन्द्र सहगल
5. डॉ. अम्बेडकर की दष्टि में इस्लाम
–प्रो. बलराज मधोक 15
6. मुनिवर गुरुदत्त 20
–डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी'
7. स्वस्थ रहें या रोगी : फैसला आपका 21
–डॉ. चंचलमल चोरडिया
8. राज्यपाल को क्या करना चाहिए? 25
–
9. गोधन ही स्वास्थ्य और समद्धि का आधार 28
–भानुप्रताप ुक्ल
10. वह अनोखा कॉलेज 30
–रेनू सैनी
11. देहलवी जी के ाास्त्रार्थ 31
–श्री लाजपतराय आहूजा
12. Be Vegetarian 32
-J.P. Vaswani
13. Global Celebration of Yoga : A Report 34

संपादकीय

बाँटो और राज करो

दे ा पर ाासन करते समय ब्रिटि ा सरकार की यह नीति थी कि दे ा को विभिन्न धर्मों, जातियों और वर्गों में विभाजित करो और उनमें परस्पर विद्वेष पैदा कर आराम से ाासन करो। यही नीति काँग्रेस को विरासत में मिली। ये भी हिन्दुओं को मुसलमानों से, अनुसूचित जातियों को सवर्णों से, जाटों को गूजरों से, अंग्रेजी के समर्थकों को अन्य भाषाओं के समर्थकों से, हिन्दी भाषा को दक्षिणी भाषाओं से लड़ा कर ाासन कर रहे थे।

इस समय चुनाव से पूर्व काँग्रेस की स्थिति उस डूबते हुए जहाज की सी है जिसमें सवार यात्री और पोतकर्मी उसे छोड़कर भागने लगे हैं। इसीलिए कुछ काँग्रेसी नेता चुनाव लड़ने से कतरा रहे हैं। यह लगभग नि चित-सा है कि ाीघ्र ही काँग्रेस सत्ता से बेदखल हो जाएगी। इसे देखकर वे अपने वोट बैंक को सँभालने में लगी है। इसीलिए उन्होंने जैनधर्म को हिन्दू धर्म से पथक् मान्यता प्रदान करने में जल्दबाजी की। इससे पूर्व बौद्ध धर्म को हिन्दू ध र्म से पथक् कर ही दिया गया था।

हाल ही में पिछड़े वर्गों के राष्ट्रीय आयोग (एन.सी.बी.सी.) द्वारा अस्वीकृत जाटों की इस माँग को कि उन्हें पिछड़े वर्गों की केन्द्रीय सूची में ाामिल कर लिया जाए, सरकार ने स्वीकार कर लिया। इस प्रस्ताव की स्वीकृति देने से चार दिन पूर्व ही पिछड़े वर्गों के राष्ट्रीय आयोग ने कहा था कि जाट लोग सामाजिक व ौक्षिक दष्टि से पिछड़े वर्ग में नहीं आते। सरकार ने यह निर्णय आगामी लोकसभा चुनावों को

ध्यान रखते हुए किया है, वि ोष रूप से जिन नौ राज्यों का इससे संबंध है वहाँ जाटों के लगभग आठ करोड़ मतदाता हैं और इस क्षेत्र से वे लोकसभा के लिए 226 सदस्यों को चुनकर भेजते हैं। ऐसा पहली बार हुआ है जब सरकार ने पिछड़े वर्गों के आयोग की रिपोर्ट को अस्वीकार करके जाटों को पिछड़े वर्ग का दर्जा दे दिया है। आयोग का कहना है कि जाटों को पिछड़े वर्गों की सूची में ाामिल करने से वर्तमान अन्य पिछड़े वर्गों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। आयोग का यह भी विचार है इस आरक्षण के बिना भी केन्द्रीय सरकार की सेवाओं और ि ाक्षा संस्थाओं में जाटों की पर्याप्त संख्या है और उनकी साक्षरता की दर भी बहुत अधिक है। आयोग ने इसके साथ ही जाटों के मुख्यमंत्रियों, राज्यपालों, राजनयिकों और उद्योगपतियों तथा बड़े व्यापारियों की सूची देकर इसे अनुचित बताया है।

भारतीय सामाजिक विज्ञान एवं अनुसंधान परिषद् को आयोग ने इस विषय में सर्वेक्षण का दायित्व सौंपा था। उसने बताया कि हरियाणा, उत्तरप्रदे ा और राजस्थान में भारतीय प्र ाासन सेवा (आई.ए.एस), भारतीय पुलिस सेवा (आई.पी. एस.) भारतीय वन सेवा (आई. एफ. एस.) में जाटों की की पर्याप्त संख्या है। यह रिपोर्ट सरकार को मंत्रिमंडल की बैठक से पूर्व ही सौंप दी नई थी। इसमें कहा गया था कि जाट समुदाय पिछड़े वर्ग की श्रेणी में आने की ार्तों को पूरा नहीं करता है क्योंकि उसमें सामाजिक और ौक्षिक दष्टि से पिछड़ापन नहीं है। परन्तु सरकार ने अपने वोट बैंक को पुष्ट करने के लिए आयोग की सिफारि ाों को दरकिनार करते हुए जाट समुदाय को प्रसन्न करने के लिए पिछड़े वर्गों में ाामिल कर लिया।

इसी तरह संविधान में स्पष्ट उल्लेख है कि धर्म के

आधार पर आरक्षण नहीं दिया जा सकता परन्तु सरकार सत्ता में बने रहने के लिए मुसलमानों को आरक्षण देने का प्रयास करती रही है। आंध्रप्रदे ा में प्रदे ा सरकार ने मुसलमानों को पिछड़े वर्ग से पाँच प्रति ात आरक्षण दे दिया जिसे आंध्रप्रदे ा न्यायालय ने और बाद में सर्वोच्च न्यायालय ने भी निरस्त कर दिया। इसी प्रकार जैसे-तैसे सत्ता में बने रहने के लिए सब हथकण्डे अपनाए जा रहे हैं। यदि काँग्रेस या कोई भी सरकार मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर चलती रही तो नि चय ही भारत को एक और विभाजन का सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि भारत के सन् 47 के विभाजन के लिए भी नेहरु-गाँधी की तुष्टीकरण नीति ही जिम्मेदार थी। इस विषय में भविष्य में बहुत सावधानी से दे ा के हित को ध्यान में रखकर कदम उठाने की आव यकता है।

आगामी लोकसभा के चुनावों के मद्देनज़र सरकार ने लोकलुभावन बजट पे ा किया जिसमें मनरेगा के अन्तर्गत काम करने वालों के लिए पहले 100 दिन कार्य देने की व्यवस्था को अब 150 दिन कर दिया गया।

सरकारी कर्मचारियों का मँहगाई भत्ता 90% से बढ़ा कर 100% कर दिया गया तथा साथ ही सातवें वेतन आयोग की समुचित व्यवस्था करने के लिए वेतन आयुक्त की नियुक्ति भी कर दी गई है।

इसके अतिरिक्त दिल्ली विधान सभा जिसमें काँग्रेस के विधायकों की संख्या कुल आठ थी उसे भंग कर दिया गया है। इसी तरह के अनेक प्रावधान वोट बैंक को ध्यान में रखकर केन्द्र सरकार ने किए हैं जिनसे सरकार की नीयत का पता चलता है।

संपादक

सांख्य द र्शन (अध्याय-1, सूत्र-76)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

अनेक आ ांका करने वाले व्यक्ति मूल उपादान के बारे में कई तरह की ांका या कल्पना कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में त्रिगुणात्मक (सत्व, रज, तम रूपी) प्रकृति के अस्तित्व के सिद्धान्त का ही अस्तित्व नहीं रहेगा। इसी आ ांका की सूत्रकार अगले सूत्र में चर्चा करते हैं।

सूत्र है-

वादिविप्रतिपत्तेस्तदसिद्धिरिति चेत्।।76।।

अर्थ- (वादिविप्रतिपत्तेः) वादियों के विरुद्ध कथन से (तद् असिद्धिः) (मूल उपादान) प्रकृति की असिद्धि होती है (इति चेत्) यदि ऐसा कहो तो।

भावार्थ - मूल उपादान प्रकृति के बारे में वादी कई तरह के तर्क प्रस्तुत कर सकते हैं, जैसे-

1. कोई कहे चेतन ई वर से जगत् की उत्पत्ति होती है,
2. कोई पुरुष को जगत् का उपादान कहे,
3. इसी प्रकार कोई स्वभाव को जगत् का उपादान बताए,
4. कुछ अन्य कारणों से जगत् की उत्पत्ति मानें,
5. कोई सूक्ष्म भूतों को सारे जगत् का उपादान कहे।

इन सभी वादों के होते हुए केवल प्रकृति को कैसे जगत् का उपादान माना जा सकता है?

इस प्रकार वादियों के द्वारा मूल उपादान के बारे में कई प्रकार के कल्पित वाद उपस्थित कर देने से प्रकृति की भ्रांति रहित सिद्धि नहीं हो सकती।

ऐसी स्थिति में सूत्रकार इसका समाधान अगले सूत्र में करेंगे।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली-10058

रामराज्य की आव यकता
(रामनवमी पर वि ोष)

–नरेन्द्र सहगल

रामराज्य की मर्यादाओं में सत्ता व्यक्तिगत–पारिवारिक भोग का साधन न होकर जनता की सेवा और संरक्षण के लिए जनता की ओर से सरकार को सौंपी गई थाती है। इसलिए उसका उपयोग समाज हित के लिए होना चाहिए न कि घपलों–घोटालों के माध्यम से अपनी तिजोरियाँ भरने के लिए।

युगानुकूल राज्यव्यस्था

आज के सन्दर्भ में देखा जाए तो अपने दे ा की सरकार और प्रजा दोनों के लिए रामराज्य की अवधारणा प्रका ा स्तम्भ का काम कर सकती है। भ्रष्ट और सत्ता केन्द्रित ाासकों का अन्त, आतंकियों/नक्सलियों जैसे राक्षसों का संहार और संपूर्ण समाज को निरंकु ा ाासन के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देने की समयोचित क्षमता रामराज्य के सूत्रों में विद्यमान है। श्रीराम का अवतरण उस युग में हुआ था जब मानवजाति हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई इत्यादि वर्गों में विभाजित नहीं थी। अतः रामराज्य की अत्यन्त व्यावहारिक व्यवस्था किसी भी पन्थ, भाषा, क्षेत्र या वर्ग की प्रतिनिधि न होकर सम्पूर्ण जनता के आद र्ा का प्रतिनिधित्व करती है। वर्तमान भारत में जनहित में स्थापित राज्य को ही रामराज्य कहा जा सकता है।

वोट बैंक की संकीर्ण राजनीति, चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला, घपलों/घोटालों में व्यस्त मन्त्री, विदे ा प्रेरित आतंकवाद, मज़हबी तुष्टीकरण, जाति आधारित राजनीति, सामाजिक वैमनस्य और सत्ता लोलुपता की परकाष्ठा में निरंकु ाता के विरुद्ध संघर्ष का सन्दे ा ही रामराज्य है। एक दिन असत्य पर सत्य की विजय नि ाचत है, अधर्म के घोर अन्धकार को चीरकर प्रका ा का आविर्भाव होगा ही। सारे सामाजिक जीवन को नष्ट करने वाली भ्रष्ट व्यवस्थाओं का भी अन्त होगा, यही सन्दे ा है रामराज्य का।

ध्येय पथ पर अडिग श्रीराम

श्रीराम के जीवन और उनके द्वारा स्थापित रामराज्य से दिग्भ्रमित राजनीति को रचनात्मक दि ा मिल सकती है। राष्ट्रीय कर्त्तव्य की बलिवेदी पर राजसत्ता के सुखों को ठोकर मार देने का आद र्ा वर्तमान सत्ता केन्द्रित राजनीति को समाप्त कर सकता है। आम समाज के विचार मंथन को ि ारोधार्य करते हुए जनता जनार्दन को सम्मानित करने के मार्ग में उनके प्राणों से भी प्यारे भ्राता लक्ष्मण का त्याग भी कम नहीं रहा। श्रीराम को अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य से पत्नी, भाई, पुत्र किसी का भी मोह विमुख नहीं कर सका। इस तरह श्रीराम अपने ध्येय पथ से कभी विचलित नहीं हुए।

धर्म की स्थापना, दुष्टों का संहार और सन्त-महात्माओं की रक्षा को अपनी जीवन यात्रा का ध्येय मानकर श्रीराम ने कि ाोरावस्था में जो कठोर संकल्प किया था, वह वर्तमान भारतीय समाज के उन युवकों के लिए प्रेरणा-स्रोत हो सकता है जो प्रत्येक प्रकार के व्यसनों, प्रलोभनों और मगमरीचिकाओं में फँसकर भारत की महान संस्कृति से दूर हटते जा रहे हैं। आज की भौतिकवादी चकाचौंध में अपनी उज्ज्वल परम्पराओं से कटते जा रहे भारतीय युवकों को यदि रामराज्य की मानवी संस्कृति की ि ाक्षा दी जाए तो नि ाचत रूप से भारत के भविष्य को महान बनाया जा सकता है।

निरहंकारी राजा, निष्काम कर्मयोगी

चौदह वर्ष तक निरन्तर संघर्षरत रहने वाले संन्यासी राम को जब राजा के रूप में राजसत्ता प्राप्त हुई तो उन्होंने अपनी प्रजा और दे ा-विदे ा से आए समस्त राजाओं-महाराजाओं के समक्ष रामराज्य के अद्वितीय आद र्ों को ही अपने ाेष जीवन का एकमात्र उद्दे य घोषित किया। 'मेरा कुछ भी नहीं, जो कुछ भी है वह जनता जनार्दन का है।' मैं तो रक्षा एवं सम्वर्धन के लिए नियुक्त एक चौकीदार हूँ।' राज्याभिषेक के समय उनके मुखमंडल पर ले ामात्र भी अभिमान का कोई चिह्न न था। श्रीराम ने कभी स्वयं को एकमात्र नेता के रूप में

महिमा-मंडित नहीं किया। यही उनका आद र्ा नेतत्व था।

प्रजा समर्पित रामराज्य

मनीषी साहित्यकार श्री जैनेन्द्र कुमार ने अपने एक लेख 'राजाराम' में श्रीराम की राजनीतिक मर्यादा का बड़ा सुन्दर विवेचन किया है। 'मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की आद र्ा पुरुषोत्तमता परिवार की सीमा तक ही नहीं रहती। यह सार्वजनिक और राजनीतिक मर्यादा के उत्कर्ष को भी अंकित करती है। यही कारण था कि भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के नायक महात्मा गाँध ाी ने भी स्वराज्य की परिभाषा देने के लिए 'रामराज्य' को ही आधार बनाया।' अतः दे ा में व्याप्त जातिवाद, भाषावाद और क्षेत्रवाद को मिटाकर सभी भारतवासियों को यदि किसी एक सूत्र में बाँधा जा सकता है तो वह है श्रीराम का आद र्ा जीवन चरित्र। संसदीय प्रजातन्त्र एवं दूसरे प्रकार की राज्य व्यवस्थाओं को दे ा और समाज के हित में संचालित करने के लिए भी श्रीराम द्वारा स्थापित मर्यादाओं का अनुसरण करना होगा। श्रीराम के लिए राज्य सत्ता व्यक्तिगत तथा पारिवारिक भोग का साधन न होकर समाज सेवा का साधन था, न कि अथाह धन बटोरने का अवसर। रामराज्य की अवधारणा के अन्तर्गत राजपद (वर्तमान भाषा में मन्त्रालय) प्रजा की ओर से राजा को सौंपी गई थाती है। इसलिए इस पद का उपयोग समाज के लाभ के लिए होना चाहिए न कि घपलों और घोटालों के माध्यम से अपनी तिजोरियाँ भरने के लिए।

सत्तालोलुपताविहीन राज्य व्यवस्था

भारत के राष्ट्रजीवन पर मंडराने वाले संकटों में सबसे बड़ा संकट उसी राजनीति का है जो ाासक को उत्तरदायित्व और कर्त्तव्यनिष्ठा की भावना से दूर हटाकर मात्र अधिकारों के साथ जोड़ती है। बहुमत आधारित लोकतन्त्र की सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि निर्वाचित नेता जनता का प्रतिनिधि न बनकर स्वामी बन बैठता है। सभी प्रकार के अधिकारों का स्वामी ाासक और कर्त्तव्यों के पालन का काम जनता का। वर्तमान लोकतन्त्र की इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी कि पूरी

सरकार अथवा सरकार का मुखिया भ्रष्ट मन्त्रियों को बचाने का प्रयास करता है। **रामराज्य एक आद र्ा लोकतन्त्र है।**

श्रीराम द्वारा प्रदत्त राजनीतिक मर्यादा में सत्ता के दुरुपयोग की कहीं कोई सम्भावना नहीं है। ाासक के अधिकारों और कर्तव्यों की परिभाषा को रामराज्य में स्थापित की गई ाासकीय मर्यादाओं के प्रका ा में समझा जा सकता है। रामराज्य की राजनीतिक व्यवस्था में संघर्ष, स्वार्थ, अहंकार और सत्तालोलुपता के लिए कोई स्थान नहीं। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और सीता के व्यवहार में सहयोग, सहजीवन, सहचिन्तन और सर्वोदय जैसे मानवीय मूल्यों का ही वर्चस्व है। श्रीराम ने रामराज्य की व्यवस्था के सभी आद र्ों को अपने व्यवहार में उतारकर वि व के समक्ष रखा और आद र्ा राजा के नाते ाासन के सूत्र सँभाले।

भारतीयता की स ाक्त अभिव्यक्ति

कि ाोरावस्था में ही महर्षि वि वामित्र के साथ जंगलों में जाकर भारत के मानबिन्दुओं को देखना, समझना और उनकी रक्षा करते हुए भारत की ऋषि परम्परा के आगे नतमस्तक होना उनके जीवन की ाुरुआत थी। यहीं पर उन्होंने भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक अखण्डता को राक्षसी ाक्तियों से पूर्णतया सुरक्षित करने का महाव्रत लिया था। फिर अपनी सूर्यवं ाी क्षत्रिय परम्परा का परिचय सारे संसार के राजाओं के समक्ष देकर सीता का वरण किया। भारत के धर्मगुरु सन्तों को योजनानुसार पिता के संकल्प की पूर्ति के लिए सत्तासुख को भी त्याग दिया।

श्रीराम ने वनों में जाकर वनवासियों एवं पिछड़ी जातियों को संगठित करके उनका उद्धार करते हुए उनको क्षत्रिय के रूप में सैनिक बाना पहनाकर राष्ट्ररक्षा हेतु तैयार किया। पिछड़ी जाति के निषाद राज को गले लगाकर भाई कहा। पक्षीराज जटायू का स्वयं अपने हाथों से अंतिम संस्कार करके उसे पिता का सम्मान दिया। भील जाति की एक वद्धा ाबरी के चरण छूकर उसे माता कौ ाल्या कहकर पुकारा। इसी प्रकार पतिता

कहलाई अहिल्या को पापमुक्त करके समाज में प्रतिष्ठा दिलाई। इस तरह भारतीय राष्ट्र जीवन के सभी मापदण्डों और सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति श्रीराम और उनके रामराज्य ने की।

पिछड़े वर्गों का उद्धार

आज अपने दे ा के कई राजनीतिक दल और नेता कथित दलित वर्ग के नाम पर अपनी सत्ता केन्द्रित राजनीति चला रहे हैं। इनके थोक वोट प्राप्त करने के लिए कई पिछड़े वर्गों को आरक्षण दिया और इन पिछड़े लोगों के मन में ऊँचे वर्गों के प्रति घोर नफ़रत भर दी। हिन्दुत्व की वि ाल राष्ट्रीय ध ारा से तोड़कर वोट बैंक पक्का करने वाले कथित समाज सुध ारकों और सत्ता के लोभी राजनीतिज्ञों को यह बात समझ में आनी चाहिए कि इन कमज़ोर वर्गों का उद्धार इन्हें श्रीराम की राष्ट्रीय धारा से तोड़कर नहीं, जोड़कर ही किया जा सकता है। श्रीराम का समस्त जीवन कमजोर वर्गों के उत्थान हेतु समर्पित था। पिछड़े बन्धुओं का उत्थान ही श्रीराम की विस्तत कर्मभूमि थी। यही वर्ग श्रीराम की समस्त लीलाओं का आधार रहे हैं। इन पिछड़ी जातियों, गरीबों, वनवासियों और गिरिवासियों के बिना रामराज्य की समग्रता और पहचान अधूरी है। यदि श्रीराम हमारे राष्ट्रजीवन की चेतना हैं तो यह राष्ट्र जीवन भी इस वर्ग के बन्धुओं के बिना अधूरा है। श्रीराम के जीवनाद र्ा समाज के सभी वर्गों में समरसता भरने का प्रयास करते हैं। आज वनवासी क्षेत्रों में विदे ाों से आए ईसाई पादरी सेवा के बहाने मतान्तरण कर रहे हैं। नागालैण्ड, मिजोरम, मध्यप्रदे ा व झारखंड आदि की समस्याएँ इसी का सीधा दुष्परिणाम हैं। इसका समाधान श्रीराम ने बताया है। उन्होंने चौदह वर्ष तक इन्हीं लोगों में रहकर अपनत्व का नाता जोड़ा।

श्रीराम का घोषित उद्दे य

आज अपने दे ा में पाकिस्तान की योजनानुसार हिंसक नक्सलवाद और जिहादी आतंकवाद जैसी आसुरी ाक्तियाँ सिर उठा रही हैं। वोट की राजनीति ने सत्तापक्ष को इतना स्वार्थी

और कमजोर बना दिया है कि इस प्रकार की आततायी ाक्तियों को सख्ती से समाप्त करने का साहस किसी में नज़र नहीं आता। श्रीराम के आने से पहले वहत्तर भारत के हृदयस्थल अयोध्या के आसपास के दुर्गम पहाड़ी वनक्षेत्रों में ध र्मविरोधी राक्षसी ाक्तियों का बोलबाला था। राजा, रंक, संत, स्त्रियाँ, देवस्थल, आश्रम इत्यादि कुछ भी सुरक्षित नहीं थे। राज्य को इस प्रकार की अ ाान्त एवं दुखित परिस्थितियों से निकालकर आद र्ा राज्य की स्थापना का बीड़ा श्रीराम ने उठाया। प्रजा के सुख के लिए सुचारु राज्य व्यवस्था की स्थापना का अपना निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए श्रीराम ने सत्ता, राजमहल और अपने प्रिय निकटतम सम्बन्धियों का भी सहर्ष त्याग किया। आज तो अपने दे ा के नेता सत्तासुख, पारिवारिकसुख और सम्पत्तिसुख के लिए प्रजासुख को ठुकराकर बड़े-बड़े घपलों, घोटालों में व्यस्त हैं। ऐसी घोर विकट स्थिति में ाान्तिपूर्ण राज्य व्यवस्था की कल्पना भी नहीं की जा सकती और न ही आतंकियों और नक्सलियों जैसी विदे ा प्रेरित आसुरी ताकतों का विना ा संभव है।

लोकहित और लोकमर्यादा

श्रीराम ने अपने आत्मसंयमी जीवन और अजेय सैनिक ौर्य द्वारा लंका से उठी अधर्म की आक्रामक लहरों को भी रोका। लंका विजय के प चात् वहाँ स्वयं राज नहीं किया, बल्कि राज्य विभीषण को सौंप दिया। अयोध्या के सिंहासन पर बैठते समय राष्ट्रीय संस्कृति और धर्म का अंकु ा स्वीकार किया। लोकहित और लोकमर्यादा पर आधारित राजसत्ता को समाजसेवा और दे ारक्षा का साधन बनाकर रामराज्य की सर्वोत्तम आद र्ा राज्य व्यवस्था का सूत्रपात किया।

श्रीराम की पुरुषोत्तमता

आज भी वि व के अनेक दे ाों में श्रीराम और रामराज्य का जो प्रभाव दिखाई दे रहा है वह भारत राष्ट्र की मर्यादा की पुरुषोत्तमता ही है हमारे राष्ट्र की रामराज्य की कल्पना के विविध आयाम सष्टि के सम्पूर्ण जीवन को मर्यादित करते रहे

हैं। यह आद र्ा और जीवन मूल्य राजा राम के पूर्व भी विद्यमान थे, सष्टि के आदि में भी थे और अन्त तक रहेंगे। भारत के अवतारी पुरुषों, महर्षियों और आध्यात्मिक राष्ट्र नेताओं ने समय-समय पर इसकी व्याख्या की, इनको समयोचित बल प्रदान किया और सामाजिक जीवन में समाहित कर दिया। श्रीराम अपने इस राष्ट्रीय और मानवीय कर्त्तव्य की पूर्ति करने के प चात् अन्त में स्वयं अपने हाथों से श्रेष्ठ नेतत्व प्रदान कर राज्य व्यवस्था सौंपकर सत्ता से हट गए।

रामराज्य की उत्कृष्ट व्यवस्था और श्रीराम का संपूर्ण जीवन भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय जीवन के पर्याय हैं। उनके आद र्ों के द्वारा समस्त वि व ने भारत के अतीत को जाना है। महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, ंकराचार्य और अरविन्द घोष ने अपनी दिव्य दष्टि से 21वीं सदी में भारतमाता के जिस ज्योतिर्मय स्वरूप को वि वगुरु के सिंहासन पर ोभायमान देखा, उसका आधार रामराज्य है।

विचार वीथि

1. अहंकारी मनुष्य में कृतज्ञता बहुत कम होती है, क्योंकि वह यही समझता है कि मैं जितना पाने योग्य हूँ, उतना कभी मुझे प्राप्त नहीं होता। वह और पाने की आ ा में कई बार अतिरेक में फँसता जाता है। ***-एच. डब्ल्यू बीचर***

2. मुनष्य मात्र में बुद्धिगत ऐसा कोई दोष नहीं है जिसका प्रतिकार उचित अभ्यास के द्वारा न हो सकता हो। ारीरिक व्याधि दूर करने के लिए जैसे अनेक प्रकार के व्यायाम हैं वैसे ही मानसिक रुकावटों को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के अध्ययन हैं। ***-बेकन***

3. अहंकार चुम्बक की भाँति सदा एक ही वस्तु का निर्दे ा करता है- स्व का, परंतु चुम्बक की भाँति वह अपनी ओर आकृष्ट नहीं करता, बल्कि अपने से दूर हटा देता है।

-कोल्टन

डॉ. अम्बेडकर की दष्टि में इस्लाम

–प्रो. बलराज मधोक (पूर्व सांसद)

डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्वतंत्र भारत के पहले विधि–मंत्री, महान चिन्तक, लेखक और राष्ट्रीय नेता थे। उन्होंने इस्लाम और उसके इतिहास का गहन अध्ययन किया था। उनकी विख्यात पुस्तक "थॉट्स ऑन पाकिस्तान" में इस्लाम के सम्बन्ध में दिये गए विचार प्रामाणिक और विचारणीय हैं। मुस्लिम साम्प्रदायिकता के सम्बन्ध में डॉ. अम्बेडकर ने कुछ प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नेताओं के विचारों को उद्धत किया है।

श्रीमती ऐनी बेसेन्ट – "खिलाफत के जेहाद की वजह से भारत को जो तमाम नुक़सान हुए हैं, उनमें से एक यह भी है कि काफिरों के खिलाफ घणा की आन्तरिक भावना पहले की तरह फिर मुसलमानों में भर गयी है और वह उसी बे ार्म और नंगे रूप में हमारे सामने हैं। हमने तलवार के पुराने धर्म–इस्लाम को व्यावहारिक राजनीति के पथ–प्रद र्क के रूप में फिर से जिन्दा होते हुए देखा है। हमने उन्हें यह दावा करते हुए देखा है कि अरब के द्वीप–जजीरत अरब की पवित्र भूमि पर किसी गैर–मुसलमान के गंदे पैर नहीं पड़ने चाहिए। हमने मुसलमान नेताओं को यह घोषित करते हुए सुना है कि यदि अफगान लोग भारत पर हमला करते हैं तो वे लोग अपने मुसलमान भाइयों के साथ हो जायेंगे और दु मनों के खिलाफ अपनी मातभूमि की रक्षा करने वाले हिन्दुओं को मार डालेंगे। हम यह देखने को विव ा हो गये हैं कि मुसलमानों की प्राथमिक निष्ठा अपनी मातभूमि में नहीं, बल्कि इस्लामी दे ाों में हैं। जब भारत की स्वतंत्रता को तात्कालिक खतरा होगा, क्योंकि अज्ञानी जनता उनके पीछे चलेगी, जो लोग पैगम्बर के नाम पर उनका आह्वान करेंगे।"

लाला लाजपतराय – "मैंने पिछले छह महीनों के दौरान अपना अधिकां ा समय मुस्लिम इतिहास और मुस्लिम कानून के अध ययन में लगाया है। मैं यह सोचने लगा हूँ कि हिन्दू–मुस्लिम एकता न तो संभव है और न ही व्यावहारिक है। मैं मुसलमान नेताओं पर वि वास करने के लिए तैयार हूँ किन्तु कुरान और

हदीस के आदे ाों के बारे में क्या होगा? नेता लोग उनकी अवज्ञा नहीं कर सकते।"

रवीन्द्रनाथ टैगोर – "हिन्दू–मुस्लिम एकता को लगभग असम्भव बनाने वाली एक महत्त्वपूर्ण वजह यह है कि मुसलमान अपनी दे ाभक्ति को एक दे ा तक सीमित नहीं रख सकते। मोहम्मद अली जैसे व्यक्तियों ने भी यह घोषित किया है कि किसी भी हालत में किसी भी दे ा के किसी दूसरे मुसलमान के खिलाफ खड़े होने की अनुमति नहीं है।"

उपरोक्त उद्धरणों के बाद डॉ. अम्बेडकर अपनी टिप्पणी देते हैं– "तमाम मान्यताओं के बीच इस्लाम की जिस मान्यता पर ध्यान दिया जाना चाहिए, वह यह है : जिस दे ा में मुस्लिम कानून लागू नहीं है, वहाँ जब भी मुस्लिम कानून और राज्य के कानून में संघर्ष हो, तो मुस्लिम कानून को ही लागू होना चाहिए और मुसलमानों को चाहिए कि वे मुस्लिम कानून को मानें और राज्य के कानून को तोड़ें।"

इस्लामी कानून के अनुसार संसार दो खेमों में बँटा है : दार–उल–इस्लाम (इस्लाम की जगह) और दार–उल–हरब (युद्ध की जगह) दार–उल–इस्लाम वे दे ा हैं, जहाँ मुसलमानों का ाासन होता है। जिन दे ाों में मुसलमान रहते तो हैं, लेकिन ाासन नहीं करते हैं, वे दे ा दार–उल–हरब कहलाते हैं। इस्लामी कानून की इस व्यवस्था की वजह से भारत हिन्दुओं और मुसलमानों–दोनों की साझी मातभूमि नहीं हो सकती है। वह मुसलमानों की भूमि तभी हो सकती है, जबकि उस पर मुस्लिमों का ाासन हो। जिस क्षण कोई भूमि किसी गैर–मुस्लिम ाक्ति के अधीन हो जाती है, वह मुस्लिमों की भूमि नहीं रह जाती है।

हमें यह नहीं मानना चाहिए कि यह बात केवल अकादमिक अहमियत की है, क्योंकि यह एक ऐसी सक्रिय ाक्ति बनने में समर्थ है, जिसमें मुसलमानों का आचरण प्रभावित हो सकता है। इस बात ने अंग्रेजों द्वारा भारत पर अधिकार करने के समय मुसलमानों के आचरण को अत्यधिक प्रभावित किया था। मुसलमानों ने तुरन्त यह सवाल उठाया कि क्या भारत

अब मुसलमानों के रहने के लायक रह गया है? कुछ अधि ाक उत्साही तत्वों ने सैयद अहमद के नेतत्व में वाकई जेहाद की घोषणा कर दी थी।

दार-उल-हरब में रहने वाले मुसलमानों के पास पलायन के लिए हिजरत केवल अकेला रास्ता नहीं हैं, इस्लामी कानून में जेहाद नाम से एक अन्य आदे ा की मौजूद है। जिस प्रकार से भारत के मुसलमानों के हिजरत करने के उदाहरण मौजूद हैं, उसी प्रकार उनके द्वारा बेहिचक जेहाद घोषित करने की मिसालें भी मौजूद हैं। इसकी एक मिसाल 1919 में भारत पर अफगानिस्तानी आक्रमण की योजना से मिलती है। यदि भारत ाुद्ध रूप से मुस्लिम ाासन के अधीन नहीं है, तो वह दार-उल-हरब है और इस्लाम की मान्यताओं के अनुसार मुसलमान वाजिब तरीके से जेहाद का ऐलान कर सकते हैं। वे न केवल जेहाद का ऐलान कर सकते हैं, बल्कि वे जेहाद की सफलता के लिए विदे ाी मुस्लिम ाक्तियों की सहायता भी माँग सकते हैं, या अगर कोई मुस्लिम ाक्ति जेहाद का ऐलान करना चाहती है तो उसके प्रयास को सफल बनाने के लिए सहयोग कर सकते हैं।

यह सर्व-इस्लामवाद का आधार है इसी की वजह से भारत का हरेक मुसलमान यह कहने के लिए प्रेरित होता है कि वह मुसलमान पहले है और भारतीय बाद में।

यथार्थवादी व्यक्ति को यह सच्चाई समझ लेनी चाहिए कि मुसलमान हिन्दुओं को काफिर समझते हैं, जो बचाये जाने से कहीं ज्यादा मार डाले जाने लायक हैं।

केवल कोई हिम्मती हिन्दू ही यह कह सकता है कि मुसलमान दे ाों के किसी हमले के वक्त हिन्दुस्तानी सेना के मुसलमान वफादार रहेंगे और यह ख़तरा नहीं रहेगा कि वे मुसलमान सैनिक हमलावरों से मिल जायेंगे। लेकिन इसका अधिक महत्त्व नहीं है कि उन्मादी मुसलमानों द्वारा मारे गये प्रख्यात हिन्दुओं की संख्या कम है या ज्यादा। प्रतिष्ठित मुसलमानों ने इन अपराधियों की कभी निन्दा नहीं की। इसके विपरीत इन अपराधि ायों की तारीफ धार्मिक ाहीद की तरह की गयी।

मैं यह अच्छी तरह नहीं बता पाऊँगा कि हिन्दू–मुस्लिम एकता की हर उम्मीद निरर्थक है। मुस्लिम महिला दुनिया की सबसे असहाय प्राणी है। जब तक दासता मौजूद थी, इस्लाम और इस्लामी दे ाों ने उसका सबसे ज्यादा समर्थन किया था। यह अच्छी तरह दिखता है कि मुसलमानों में न केवल जाति मौजूद है, बल्कि छुआछूत भी मौजूद है।

दरअसल मुसलमानों में हिन्दुओं की सभी सामाजिक बुराइयाँ तो हैं ही, इसके साथ कुछ और भी बुराइयाँ हैं। मुसलमानों की एक अतिरिक्त बुराई है–मुस्लिम स्त्रियों के पर्दे की अनिवार्यता। बुर्का पहनी हुई इन औरतों को सड़क पर चलते हुए देखना भारत में सबसे भयानक चीजों में से एक हैं। पर्दे ने मुस्लिम पुरुषों के चरित्र पर बुरा प्रभाव छोड़ा है। जो सामाजिक व्यवस्था स्त्री–पुरुष के बीच के सभी सामाजिक सम्पर्क समाप्त करती है, उसमें वासना की अधिकता और अन्य अप्राकृतिक तथा विकृत तरीकों को बढ़ावा मिलता है।

हिन्दुओं का यह कहना सही है कि हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सामाजिक सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सकता। मुस्लिम राजनीति अनिवार्यतः मज़हबी है और वह केवल हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच के फर्क को ही मानती है। मुसलमानों की राजनीति में जीवन के धर्मनिरपेक्ष वर्गों को कोई जगह नहीं है। मुसलमानों के बीच इन बुराइयों की मौजूदगी से काफी कष्ट होता है। लेकिन इससे भी कहीं अधिक कष्ट इस बात से होता है कि भारत के मुसलमानों के बीच ऐसा कोई संगठित आन्दोलन नहीं है, जो उन्हें समाप्त कर सकने में सक्षम हो। दरअसल इस्लाम की एक बड़ी खासियत यह है कि उसने जिन नस्लों को गुलाम बनाया है, उनको इस्लाम ने बर्बरता से जकड़ लिया है। रेना ने लिखा है– "दरअसल विज्ञान से घणा ही मुसलमानों की अनिवार्य वि ोषता है।" आक्रमण भावना मुसलमानों की एक खास बात है। आक्रमण की भावना के प्रद र्ान में मुसलमान हिन्दुओं से बहुत आगे हैं।

मुसलमानों के राजनैतिक आक्रमण ने एक ऐसी बीमारी पैदा की है, जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता है। मुसलमान

हिटलर की भाषा बोल रहे हैं।

मुसलमानों में ध्यान देने वाली दूसरी चीज हिन्दुओं की कमजोरी का ाोषण करने की उनकी प्रवत्ति है।

मुसलमानों ने राजनीति में सामूहिक गुंडागर्दी का तरीका अपना लिया है। दंगों से इस बात का पर्याप्त संकेत मिलता है कि गुंडागर्दी राजनीति में उनकी रणनीति का स्थायी हिस्सा बन गयी है।

काँग्रेस इस बात को समझने में असफल रही है कि मुस्लिम तुष्टीकरण और समाधान में फर्क है। तुष्टीकरण का मतलब यह है कि जिन लोगों ने निर्दोष लोगों की हत्या, बलात्कार, लूट और आगजनी की है, उनके कुकृत्यों में सहयोग करके उनको खरीद लिया है।

काँग्रेस इस बात को समझने में असफल रही है कि मुसलमानों को सहूलियतों देते जाने की उसकी नीति ने मुसलमानों की आक्रामकता को बढ़ाया है और उससे भी बुरी बात यह है उन सहूलियतों से मुसलमानों को यह लगा है कि हिन्दू पराजयवादी हैं और हिन्दुओं में बदला लेने की प्रवत्ति नहीं है।

इस्लामी कानून की इस व्यवस्था की वजह से भारत हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की साझी मातभूमि नहीं हो सकती है। मुसलमानों के लिए हिन्दू काफिर हैं। काफिर सम्मान के लायक नहीं है। काफिर नीच जन्म वाला है।

यह हिन्दुओं को तय करना है कि वे अतीत की हिन्दू-मुस्लिम एकता की अपनी सभी कोि ाों के दुखद अन्त के बावजूद इस मिथ्या प्रयास में अपने को लगाये रखेंगे या एकता की कोि ा को छोड़ देंगे।

चूँकि हमलों में मंदिरों का विध्वंस और जबरिया धर्म-परिवर्तन किया गया, सम्पत्ति लूटी गयी, उन्हें गुलाम बनाया गया, इसलिए अगर उन हमलों की यादें हमे ाा ताज़ी रहें, तो इससे अचरज की क्या बात है?

जे-394, ांकर रोड, न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-60

मुनिवर गुरुदत्त

–डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी'

अल्प आयु में सत्य ाोध की इच्छा और लगन का।
मुनिवर गुरुदत्त नाम असल में है निर्धन के धन का।।
किसे पता अभिमन्यु बना यह व्यक्ति–व्यूह भेदेगा।
तर्क–तीर से रोग– ाोक की छाती को छेदेगा।
ज्ञानवद्ध बन सुलझायेगा छोर हर इक उलझन का।
मुनिवर गुरुदत्त नाम असल में है निर्धन के धन का।।
अन्तिम द य देख गुरुवर का प्रभु–वि वासी होकर।
जुटा प्राणपण से स्वधर्म में विष–अभ्यासी होकर।
घावों पर मरहम लग जाये ऐसी ाुभ चितवन का।
मुनिवर गुरुदत्त नाम असल में है निर्धन के धन का।।
कीर्तिमान जो किया स्थापित कोई तोड़ न पाया।
तुमने टूटे दिल जोड़े जो कोई जोड़ न पाया।
मरुथल में ाीतलता देने वाले इक उपवन का।
मुनिवर गुरुदत्त नाम असल में है निर्धन के धन का।।
साँसें अगर अधिक मिलतीं तो वि व देख यह पाता।
गुरु के पगचिह्नों से ि ाष्यों का होता क्या नाता।
सुविधा की समिधा से रूठा ऐसे दिव्य हवन का।
मुनिवर गुरुदत्त नाम असल में है निर्धन के धन का।।
अपनी मौलिक प्रतिभा की हर छाप अलग होती है।
धरती अंबर में वह ाुभ के बीज सदा बोती है।
कलियुग के आँगन में सतयुग के संगीत सपन का।
मुनिवर गुरुदत्त नाम असल में है निर्धन के धन का।।

स्वस्थ रहें या रोगीः फैसला आपका

-डॉ. चंचलमल चोरडिया

स्वास्थ्य हेतु सम्यक् चिन्तन आव यक-

हमारा ारीर हमारे लिए दुनिया की सर्वश्रेष्ठ निधि है। अमूल्य अंगों, उपांगों, इन्द्रियों, मन, मस्तिष्क और विभिन्न अवयवों द्वारा निर्मित मानव जीवन का संचालन और नियन्त्रण कौन करता है? यह आज भी वैज्ञानिकों के लिए ाोध का विषय है। स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विज्ञान के विकास एवं लम्बे-चौड़े दावों के बावजूद ारीर के लिए आव यक रक्त, वीर्य, मज्जा, अस्थि जैसे अवयवों का उत्पादन तथा अन्य अंगों, इंन्द्रियों का निर्माण आज तक सम्भव नहीं हो सका। मानव ारीर में प्रायः संसार में उपलब्ध अधिकां ा यंत्रों से मिलती-जुलती प्रक्रियाएँ होती हैं। मानव मस्तिष्क जैसा सुपर कम्प्यूटर, आँखों जैसा कैमरा, हृदय जैसा अनवरत चलने वाला पम्प, कान जैसी श्रवण व्यवस्था, आमा ाय जैसा रासायनिक कारखाना आदि एक साथ अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। उससे भी आ चर्यजनक बात तो यह है कि सारे अंग, उपांग, मन और इन्द्रियों के बीच आपसी तालमेल है। यदि कोई तीक्ष्ण पिन, सुई और काँच आदि ारीर के किसी भाग में चुभ जाएँ तो सारे ारीर में कँपकँपी हो जाती है आँखों से आँसू और मुँह से चीख निकलने लगती है। ारीर की सारी इन्द्रियाँ एवं मन क्षण भर के लिए अपना कार्य रोक कर ारीर के उस स्थान पर केन्द्रित हो जाते हैं। उस समय न तो मध ुर संगीत अच्छा लगता है और न ही मन-भावन द य। न हँसी-मजाक में मजा आता है और न खाना-पीना ही अच्छा लगता है। मन जो दुनिया-भर में भटकता रहता है, उस स्थान पर अपना ध्यान केन्द्रित कर देता है। हमारा सारा प्रयास सबसे पहले उस चुभन को दूर करने में लग जाता है। जैसे ही चुभन दूर होती है, हम राहत का अनुभव करते हैं। **जिस ारीर में इतना आपसी सहयोग, समन्वय, समर्पण, अनु ाासन और तालमेल हो अर्थात् ारीर के किसी एक भाग में दर्द, पीड़ा और कष्ट होने की स्थिति में सारा ारीर प्रभावित हो तो क्या ऐसे स्वचालित,**

स्वनियन्त्रित, स्वानु ाासित ारीर में असाध्य एवं संक्रामक रोग पैदा हो सकते हैं? चिन्तन का प्र न है।

मानव जीवन अनमोल है, अतः उसका दुरुपयोग न करें। वर्तमान की उपेक्षा भविष्य में परे ाानी का कारण बन सकती है। वास्तव में हमारे अज्ञान, अविवेक, असंयमित, अनियंत्रित, अप्राकृतिक जीवनचर्या के कारण जब ारीर की प्रतिकारात्मक क्षमता से अधिक ारीर में अनुपयोगी, विजातीय तत्व और विकार पैदा होते हैं तो ाारीरिक क्रियाएँ पूर्ण क्षमता से नहीं हो पातीं, जिससे धीरे-धीरे रोगों के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। **अनेक रोगों की उत्पत्ति के प चात् ही कोई रोग हमें परे ाान करता है। उसके लक्षण प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रकट होने लगते हैं। ारीर में अनेक रोग होते हुए भी किसी एक रोग की प्रमुखता हो सकती है। अधिकां ा प्रचलित चिकित्सा पद्धतियाँ, उसके आधार पर रोग का नामकरण, निदान और उपचार करती हैं। प्रायः रोग के अप्रत्यक्ष और सहयोगी कारणों की उपेक्षा के कारण उपचार आं ाक एवं अधूरा ही होता है। सही निदान के अभाव में उपचार हेतु किया गया प्रयास अधूरा ही रहता है। जो कभी-कभी भविष्य में असाध्य रोगों के रूप में प्रकट होकर अधिक कष्ट, दुःख और परे ाानी का कारण बन सकता है। ारीर, मन एवं आत्मा की विकारमुक्त अवस्था ही सम्पूर्ण स्वस्थता का प्रतीक है।**

जनसाधारण किसी बात को तब तक स्वीकार नहीं करता, जब तक उसे आधुनिक विज्ञान द्वारा प्रमाणित और मान्य नहीं कर दिया जाता। परन्तु चिकित्सा के क्षेत्र में आधुनिक चिकित्सकों की सोच आज भी प्रायः ारीर तक ही सीमित है। मन एवं रोगी को रोग से राहत नहीं होती और उसके लिए हिंसा, अन्याय, अवर्जित, अभक्ष्य का विवेक उपेक्षित एवं गौण हो जाता है। अतः ऐसा आचरण कभी-कभी प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों के विपरीत होने के कारण, उपचार अस्थायी हो सकता है। वास्तव में **जो चिकित्सा ारीर को स्वस्थ,**

ाक्ति ाली, रोगमुक्त बनाने के साथ-साथ मन को संयमित, नियन्त्रित, अनु ाासित और आत्मा को निर्विकारी, पवित्र एवं ाुद्ध बनाती है- वे चिकित्सा पद्धतियाँ ही स्थायी प्रभाव ाली एवं सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति होने का दावा कर सकती हैं।

चिकित्सा पद्धति की सबसे महत्त्वपूर्ण आव यकता होती है, उसकी प्रभाव ीलता, तुरन्त राहत पहुँचाने की क्षमता तथा दुष्प्रभावों से रहित स्थायी रोग मुक्ति। अतः जो चिकित्सा पद्धतियाँ जितनी ज्यादा स्वावलम्बी होती हैं, रोगी की उसमें उतनी ही भागीदारी एवं सम्यक् पुरुषार्थ होने से वे प्रभाव ाली भी होती है। अधिकां ा चिकित्सा पद्धतियों का उद्दे य मानव के ारीर को स्वस्थ रखने तक की सीमित होता है। अतः उपचार करते समय हिंसा को बुरा नहीं मानते। स्वयं को तो एक पिन की चुभन भी सहन नहीं होती, परन्तु आज वीडियो, कम्प्यूटर और मोबाइल जैसे वैकल्पिक साधनों की उपलब्धता के बावजूद ाारीरिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए मूक, असहाय, बेकसूर जीवों की अनाव यक हिंसा और उससे, निर्मित दवाइयों के परीक्षणों हेतु जीव-जन्तुओं को क्रूरतम हृदय विदारक यातनाएँ देना, मानव की स्वार्थी मनोवत्ति का प्रतीक है। भोजन में मांसाहार, अण्डों और मछलियों को पौष्टिक बतला कर प्रोत्साहन देना पा ाविकता का द्योतक है। किसी प्राणी को दुःख दिए बिना हिंसा, क्रूरता, निर्दयता हो नहीं सकती। जो प्राण हम दे नहीं सकते, उसको लेने का हमें क्या अधिकार? दुःख देने से दुःख ही मिलेगा। प्रकृति के न्याय में देर हो सकती है, अँधेर नहीं। अतः चिकित्सा के नाम पर प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप में हिंसा करना, कराना और करने वालों को दवाओं के माध्यम से ारीर में जाने वाली उन बेजुबान प्राणियों की बद-दुआएँ ारीर को दुष्प्रभावों से ग्रसित करें, तो आ चर्य नहीं। अतः चिकित्सा की दूसरी प्राथमिकता होती है अहिंसक उपचार। जिसके लिए हिंसा और अहिंसा के भेद को समझ अनाव यक हिंसा से यथासम्भव बचना होगा। चिकित्सा पद्धतियाँ जितनी अधिक अहिंसा के सिद्धान्तों पर आधारित होती हैं वे ारीर के साथ-साथ मन और आत्मा के विकारों को भी दूर करने

के कारण ीघ्र, स्थायी एवं अत्यधिक प्रभाव ाली होती हैं।

क्या ारीर के नियमित संचालन हेतु ारीर विज्ञान की विस्तत जानकारी आव यक है?

हम साल के 365 दिनों में अपने घरों में बिजली के तकनीी ियन को प्रायः 8 से 10 बार से अधिक नहीं बुलाते। 365 दिन जैसे स्विच चालू करने की कला जानने वाला बिजली के उपकरणों का उपयोग आसानी से कर सकता है। उसे यह जानने की आव यकता नहीं होती कि बिजली का आविष्कार किसने, कब और कहाँ किया? बिजलीघर से बिजली कैसे आती है? कितनी वोल्टेज, करेन्ट और फ्रीक्वेन्सी है? मात्र स्विच का उपयोग जानने वाला बिजली का उपयोग कर सकता है। विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों की ऐसी साधारण जानकारी से व्यक्ति न केवल स्वयं अपने आपको स्वस्थ रख सकता है, अपितु असाध य से असाध्य रोगों का बिना किसी दुष्प्रभाव के प्रभाव ाली ढंग से उपचार भी कर सकता है।

स्वावलंबी चिकित्सा पद्धतियाँ क्यों प्रभाव ाली?

बिना दवा उपचार के स्वावलंबी चिकित्सा पद्धतियाँ सहज, सरल, सस्ती, स्थायी, दुष्प्रभावों से रहित, ारीर की प्रतिकारात्मक क्षमता को बढ़ाने वाली होती हैं। जो व्यक्ति का स्वविवेक जागत कर, स्वयं की क्षमताओं के सदुपयोग की प्रेरणा देती हैं। वे हिंसा पर नहीं अहिंसा पर, विषमता पर नहीं समता पर, साधनों पर नहीं साधना पर, दूसरों पर नहीं स्वयं पर, क्षणिक राहत पर नहीं, अपितु अन्तिम प्रभाव ाली स्थायी परिणामों पर आधारित होती हैं। रोग के लक्षणों की अपेक्षा रोग के मूल कारणों को नष्ट करती हैं जो ारीर के साथ-साथ मन एवं आत्मा के विकारों को दूर करने में सक्षम होती हैं। जो जितना महत्त्वपूर्ण होता है, उसको उसकी क्षमता के अनुरूप महत्त्व एवं प्राथमिकता देती हैं। यह प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों पर आधारित होने के कारण अधिक प्रभाव ाली, वैज्ञानिक, मौलिक एवं निर्दोष होती हैं।

-चोरडिया भवन, जालारी गेट के बाहर, जोधपुर (राज.)

फोन : 2621454, मो. 94141-34606

राज्यपाल को क्या करना चाहिए?

जवाहरलाल नेहरु का पत्र

कुछ राज्यपालों की भूमिका ने राज्यपाल की संस्था पर गंभीर बहस छेड़ दी है। ऐसा कई बार देखा गया है कि राज्यपाल अपने संवैधानिक दायरे को लाँघ कर केंद्र के राजनीतिक एजेंट के रूप में कार्य करने लगते हैं। आजादी के बाद के वर्षों में राज्यपाल की भूमिका पर काफी चर्चा हुई थी। हम यहाँ राज्यपाल के दायित्वों और कार्यों के बारे में तत्कालीन प्रध ाानमंत्री जवाहरलाल नेहरु का एक पत्र प्रस्तुत कर रहे हैं, जो उन्होंने 6 जुलाई, 1958 को मध्यप्रदे ा के तत्कालीन राज्यपाल एच. वी. पाटसकर को लिखा था।

नई दिल्ली

6 जुलाई, 1958

मेरे प्रिय पाटसकर,

आपके 30 जून 1958 के पत्र के लिए धन्यवाद, जिसके साथ आपने राज्यपाल की संवैधानिक स्थिति और उसके कार्यों के बारे में एक नोट भी भेजा है। जैसा कि आप जानते हैं, इस मसले पर राज्यपालों के सम्मेलनों में चर्चा हो चुकी है। पिछले दो या तीन वर्षों के दौरान कुछ मौकों पर मैंने इस विषय में राज्यपालों और मुख्यमंत्रियों को पत्र भी लिखे हैं। मैंने पाया है कि राज्यपाल की स्थिति या उसके द्वारा किया जाने वाला कार्य विभिन्न राज्यों में अलग-अलग है। कुछ राज्यों में उसने सरकार के क्रियाकलाप में गहरा हिस्सा लिया और विभिन्न मुद्दों पर उससे पराम र्ा भी किया गया। कुछ अन्य राज्यों में उसने ाायद ही किसी चीज में हिस्सा लिया और कभी-कभी तो उसने महत्वपूर्ण दस्तावेज देखने की भी जरूरत नहीं समझी। मेरा मानना है कि सलाह और विम र्ा के मामले में राज्यपाल को हर हालत में गहराई के साथ जुड़ना चाहिए।

मैं आपकी इस बात से बिल्कुल सहमत हूँ कि आज राज्यपाल की स्थिति आजादी से पहले के दिनों से एकदम अलग है। आपने कुछ अंतरों का उल्लेख भी किया है। यह सही है कि गवर्नर पहले इंग्लैण्ड के ताज का प्रतिनिधित्व करता था और वह एक तरह से वाइसराय का एजेंट होता था, जो कि खुद

ब्रिटि ा सरकार का एजेंट था। इसके साथ-साथ वह राज्य या प्रॉविंस का कार्यकारी प्रमुख भी होता था और सारे महत्वपूर्ण फैसले लेने की पूरी जिम्मेदारी उसी की होती थी। लेकिन इन फैसलों का अनुमोदन तत्कालीन भारत सरकार द्वारा किया जाता था। एक तरह से उसके पास मौजूदा राज्यपालों की तुलना में कहीं ज्यादा जिम्मेदारी और कार्यकारी दायित्व थे।

वर्तमान राज्यपाल राज्य का संवैधानिक प्रमुख है और वह राज्य सरकार के कार्यकारी निर्णयों के लिए सीधे जिम्मेदार नहीं होता। संविधान द्वारा उसके लिए निर्धारित कुछ दायित्वों का यह मतलब नहीं है कि वह बीते दिनों के गवर्नर की तरह कोई कार्यकारी निर्णय ले सकता है। यह जरूरी है कि राज्य सरकार राज्यपाल के नाम पर ही कार्य करती है, ठीक उसी तरह जैसे केंद्र सरकार राष्ट्रपति के नाम पर कार्य करती है, हालाँकि सारे फैसले सरकार के ही होते हैं। यह सही है कि राज्यपाल एक संवैधानिक प्रमुख है, पर मेरा मानना है कि उसके पास कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य हैं। मुख्य रूप से ये कार्य राज्य सरकार को सलाह देने और राष्ट्रपति को भलीभाँति वाकिफ रखने से वास्ता रखते हैं। सलाह तभी दी जा सकती, जब राज्यपाल खुद राज्य के घटनाक्रम के संपर्क में हो। दूसरी बात यह कि इस तरह के संपर्क में रहकर ही राष्ट्रपति को भलीभाँति वाकिफ रखा जा सकता है।

आपने यह बात बिल्कुल सही कही कि हमारे नए संविधान के प्रभावी होने के प्रारंभिक वर्षों में राज्यपाल और सरकार एक ही राजनीतिक संगठन से जुड़े हुए थे। इससे राज्यपाल के कुछ दायित्वों में कुछ हद तक विकृतियाँ आई हैं। हमारे सामने ऐसे मामले भी आए, जहाँ राष्ट्रपति ाासन की जरूरत पड़ी। जाहिर है, इसमें राज्यपाल को बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी पड़ी। सबसे पहले उसे राज्य के हालात का ब्यौरा भेजना पड़ा और इसके अनुरूप राष्ट्रपति को सलाह दी गई। इसके प चात् उसे राष्ट्रपति की तरफ से राज्य में सरकार चलाने की जिम्मेदारी भी सँभालनी पड़ी।

मैं आपकी इस बात से पूरी तरह से सहमत हूँ कि एक राज्यपाल को बहुत ही महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का निर्वाह करना

होता है। उसकी दलीय प्रतिबद्धता चाहे कुछ भी हो, उसे पार्टी पॉलिटिक्स से एकदम अलग होकर तथा रोजमर्रा के प्र ाासन से असंबद्ध होकर कार्य करना होता है। उसे यह देखना चाहिए कि किसी भी तरह हमारे संविधान का उल्लंघन नहीं हो। खासतौर पर मेरा यह मानना है कि उसे अल्पसंख्यकों के हितों की निगरानी और रक्षा करनी चाहिए, भले ही वे धार्मिक, भाषाई या अन्य किसी वर्ग के क्यों न हों।

यह सब कैसे किया जाए? हम राज्यपाल को कार्यकारी ाक्ति प्रदान नहीं कर सकते क्योंकि इससे दो सत्ताएँ पैदा होंगी, जो आपस में टकराएँगी। न ही, मेरे ख्याल से, हम ऐसे बहुत ज्यादा कड़े नियम बना सकते हैं, जो संविधान के सुचारू रूप से काम करने में रुकावट डालें, या राज्यपाल और राज्य में उनके मंत्रिमंडल के बीच तनातनी उत्पन्न करें। मोटे तौर पर ये सारी चीजें परंपरा के रूप में आनी चाहिए।

हमारे संविधान में ऐसी बहुत-सी चीजों का उल्लेख है, जो राज्यपाल द्वारा की जानी चाहिए। जैसे माफी देने का अधिकार, किसी व्यक्ति को एडवोकेट जनरल के रूप में नियुक्त करने का अधिकार, आदि। मेरे ख्याल से इन अधिकारों का प्रयोग मंत्रिपरिषद की सलाह पर किया जाना चाहिए। राज्यपाल निजी तौर पर सलाह दे सकता है, और उसकी सलाह का वजन होना चाहिए। लेकिन यदि वह खुद अपनी मनमर्जी से नियुक्तियाँ करने लगे तो बड़ी कठिनाई उत्पन्न हो जाएगी।

असली मुद्दा राज्यपाल को महत्वपूर्ण मसलों से वाकिफ करने और उसकी सलाह लेने का है, लेकिन मंत्रिपरिषद इन मामलों में उसकी सलाह लेने के लिए बाध्य नहीं है। यदि कोई बहुत ही महत्वपूर्ण मामला है तो राज्यपाल राष्ट्रपति को रिपोर्ट कर सकता है। राज्यपाल के लिए अपनी मंत्रिपरिषद को नजरअंदाज करना बहुत मुकिल होगा। यदि परिषद कोई बहुत ही गलत कदम उठाती है तो वह मामले को राष्ट्रपति के पास भेज सकता है।

आपका,

जवाहरलाल नेहरु

गोधन ही स्वास्थ्य और समद्धि का आधार

–भानुप्रताप ुक्ल

6, 7, 8 सितंबर 2002 को सम्पन्न वि व आयुर्वेद परिषद् के मार्गद र्न में भारतीय प्रौद्योगिक संचालन और नेताजी सुभाष प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली द्वारा आयोजित 'पंचगव्य' सम्मेलन में पहली बार गोमाता की आध्यात्मिक वैज्ञानिकता को भौतिक वैज्ञानिकता और अनुसंधान की कसौटी पर परखा और उपयोगी सिद्ध किया गया। गोमाता केवल हमारे भावलोक की ही नहीं, समद्ध भौतिक संसार का भी आधार है।

स्वतंत्रता के बाद हमारे ाासकों ने गोवं ा को नष्ट कर भारत को चमड़े और मांस की मंडी में परिवर्तित करने की योजना बनाई और खेती के लिए ट्रेक्टर और रासायनिक खादों को अपनाया। इसके दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं। इस अंधकार के बीच गोसंस्कृति की किरण ने 'फायदावादियों के फायदे के केन्द्र में गोमाता को एक बार पुनः खड़ा कर दिया है। हमारे दे ा के वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया और वि व के वैज्ञानिकों ने इसे स्वीकार भी कर लिया कि गोमाता का दूध ा ही नहीं, उसका मूत्र भी अमत है। कैंसर जैसे घातक रोग से मुक्ति दिलाने के तत्त्व उसमें पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। गोवं ा और गोधन को स्वास्थ्य और समद्धि का नियामक बनाया जाना चाहिए। पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जो ाी और वैज्ञानिकों का प्रयास गोमूत्र को 'पेटेंट' कराने के रूप में फलीभूत हुआ है। हमारे अपने दे ा में भी अब ऐसी परिस्थिति उभरने लगी है कि हमें भी जैविक खेती में ही मानव सहित संपूर्ण जीव–जगत् एवं वनस्पतियों की सुरक्षा का मार्ग दिखाई देने लगा है। हरित क्रांति में अग्रणी भूमिका रखने वाले पंजाब की उर्वर मिट्टी अब बीमार होने लगी है। अत्यधिक सिंचाई के कारण भू–जल का संकट पैदा होने लगा है। मिट्टी को उर्वर बनाने वाले कीट, केंचुए समाप्त होते जा रहे हैं। हानिप्रद कीटों एवं टिड्डियों से फसलों की रक्षा करने वाले तितली, बगुले, गिद्ध, जुगनू और अन्य पक्षियों का भी ना ा होने लगा है।

सर्वत्र यह चिंता व्याप्त होने लगी है कि मनुष्य और संपूर्ण जीव–जगत् को सर्वना ा से बचाने का कोई मार्ग खोजना चाहिए। स्वदे ा ही नहीं, विदे ा के भी अनेक विचारक अब इस निष्कर्ष पर पहुँच रहे हैं कि विना ा के इस दु चक्र से बचने का एक ही रास्ता है कि आर्थिक विकास का एक ऐसा प्रारूप बनाया जाए, जिससे भक्षण नहीं, पोषण को प्रमुखता

प्राप्त हो और पोषण का रास्ता गोवं ा की रक्षा के बिना प्राप्त नहीं हो सकेगा। गाय को जिस बर्बरता से कसाईखानों में काटा जा रहा है, उसके मांस और चमड़े की बिक्री में 'फायदावादियों' को जिस प्रकार पैसा दिखाई दे रहा है, इसमें कोई सं ाय नहीं कि यह सर्वना ा को बुलावा है। पंचनद-पंजाब की उर्वर भूमि रेगिस्तानी होती जा रही है, तो इसलिए कि वहाँ का प ाुधन समाप्तप्राय है। वहाँ की खेती रासायनिक खाद पर निर्भर है। गोवं ा की आव यकता और उसकी अनिवार्यता भुला दी गई थी।

रासायनिक खादों और कीटना ाकों का विकल्प है गोबर और गोमूत्र। यह सिद्ध हो चुका है कि एक गाय के गोबर से एक हेक्टेयर भूमि की उर्वरा ाक्ति को न केवल अक्षुण्ण रखा जा सकता है, अपितु उसे संवर्द्धित भी किया जा सकता है एक टन कचरे को दस किलो गोबर की सहायता से उत्तम खाद में परिवर्तित किया जा सकता है। नाइट्रोजन, फॉस्फेट आदि उर्वरता प्रदान करने वाले तत्त्व इस खाद के प्रयोग से विदे ाी खाद के आयात में इक्कीस हजार सात सौ सत्तानवे करोड़ रुपये सब्सिडी के रूप में व्यय होने वाला धन भी बचाया जा सकता है। रासायनिक और कीटना ाक दवाओं की तुलना में नीम की पत्ती और गोमूत्र से निर्मित कीटना ाक अधिक लाभकारी हैं। इससे हमारी अर्थव्यवस्था की ही नहीं, पर्यावरण की भी रक्षा की जा सकती है। यदि रासायिक खाद और कीटना ाक दवाएँ हमारी ध ारती सहित सभी जीव-जंतुओं के लिए विष के समान हैं, तो गोवं ा ही इसका एकमात्र अमतमय परिहार है। गाय का गोबर घातक रेडियोधर्मी विकिरणों का ामन करने में सक्षम है। इसकी उपयोगिता पर विचार करने के लिए हम एक न एक दिन विव ा होंगे। मुं ाी प्रेमचंद के उपन्यास गोदान का, जिसे ग्राम्य जीवन का 'महाकाव्य' कहा जाता है, केंद्रीय प्रतिपादन बिंदु केवल गाय है। उपन्यास के नायक होरी की गाय जब मर जाती है, तो वह किसान (मालिक) से मजदूर हो जाता है। मनुष्य ही नहीं, सष्टि के समस्त जड़-चेतन के कष्टों का निदान गोवं ा के संवर्द्धन एवं संरक्षण में है। इस विषय में महर्षि दयानन्दकृत 'गोकरुणानिधि' का स्वा. विद्यानन्द जी कृत भाष्य भी पाठनीय है।-ज.आ.)

भारतमाता नगर नहीं, ग्रामवासिनी है। गाँव का आधार है कृषि, कृषि का आधार है उर्वरा भूमि, उर्वरा भूमि का आधार है गोध ान। गाँव, गाय, ग्रामोद्योग, समद्धि और राष्ट्रीय स्वाभिमान की यात्रा और कहीं से नहीं, यहीं से आरम्भ होगी।

वह अनोखा कॉलेज

संकलन–रेनू सैनी

यह घटना उस समय की है, जब स्वतंत्रता आंदोलन में तेजी आ रही थी। सरकारी ि ाक्षा संस्थाओं का बहिष्कार इसका हिस्सा था। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों के लिए अच्छी ि ाक्षा–दीक्षा का उचित प्रबंध भी आव यक हो गया था। लेकिन बंगाल के आंदोलनकारियों के पास न तो इतना धन था और न ही सुविध ाएँ, जिससे कि विद्यालय चलाया जा सके। निर्णय हुआ कि आपसी सहयोग से ही ऐसा कॉलेज खोला जाए। किसी तरह चंदा जमा किया गया। आम लोगों से जितना कुछ बन सका, सब ने सहयोग किया। फिर भी चंदे से जो रा ि मिली वह काफी नहीं थी। आखिरकार जैसे–तैसे एक कॉलेज खोला गया। लेकिन इसके लिए संचालक की आव यकता थी। उसकी नियुक्ति के लिए विज्ञापन दे दिए गए। संचालक का वेतन कुल पचहत्तर रुपये मासिक तय किया गया। एक संचालक के लिए उस समय यह वेतन काफी कम था किंतु प्रबंध समिति संचालक को इससे अधिक वेतन देने की स्थिति में नहीं थी। खुद प्रबंध समिति के सदस्यों ने इस बात को स्वीकार किया कि ायद इस वेतन पर कोई भी काम करना स्वीकार न करे। विज्ञापन के जवाब में बहुत दिनों तक कहीं से भी कोई आवेदन नहीं आया तो प्रबंध ा समिति निरा ा हो गई। मगर एक दिन अचानक ऐसे व्यक्ति का आवदेन पत्र आया, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। बड़ौदा कॉलेज के अध्यक्ष अरविन्द घोष ने, जिन्हें उस समय अनेक सुविधाओं के साथ सात–आठ सौ रुपये मासिक वेतन मिलता था, मात्र पचहत्तर रुपये मासिक वेतन पर राष्ट्रीय महाविद्यालय का संचालक बनना स्वीकार कर लिया था। यह खबर सुनकर तत्कालीन सभी ि ाक्षा ाास्त्रियों ने स्वीकार किया कि 'जिस ौक्षणिक संस्था के संचालकों का चरित्र महान और जीवन त्यागपूर्ण होगा, नि चय ही वहाँ के विद्यार्थी भी महान होंगे।' और ऐसा ही हुआ। बाद में इस कॉलेज से अनेक चोटी के दे ाभक्त राजनेता निकले जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया और दूसरों को भी प्रेरित किया।

देहलवी जी के ाास्त्रार्थ

–श्री लाजपतराय आहूजा

पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी एक ाास्त्रार्थ करने के लिए ट्रेन द्वारा सहारनपुर जा रहे थे। ट्रेन देवबन्द स्टे ान पर ठहरी। कुछ मुसलमान एक मौलाना को बड़े स्वागत–सम्मान के साथ लाये। उनके गले में बीसियों मालाएँ पड़ी हुई थीं। दैवयोग से उन्हें देहलवी जी वाले डिब्बे में ही बैठा दिया गया। गाड़ी चली। पण्डित जी समझ गये कि सम्भवतः मेरा ाास्त्रार्थ इसी व्यक्ति से होगा। सोचा देख भी लें यह कितने पानी में है। पण्डितजी ने उनसे पूछा– 'मौलाना! कहाँ जा रहे हैं। आपको ये लोग बड़े सम्मान से गाड़ी पर चढ़ाकर गये हैं।' मौलाना बोले– 'सहारनपुर एक ाास्त्रार्थ करने जा रहा हूँ।'

'किसके साथ', देहलवी जी ने पूछा।

उन्होंने उत्तर दिया – 'एक पंडित देहलवी हैं, उनके साथ ाास्त्रार्थ करना है।'

' ाास्त्रार्थ कौन से दिन है', पंडितजी का अगला प्र न था।

' ानिवार को', मौलाना ने उत्तर दिया।

'आज कौन सा दिन है', देहलवी जी ने पूछा।

'आज जुमेरात है' उन्होंने उत्तर दिया।

पण्डितजी बोले – 'मौलाना! मैंने दिन पूछा है, आप रात बता रहे हैं।' मौलाना समझ गये ाायद इन्हीं के साथ ाास्त्रार्थ होना है, अतः अगले स्टे ान पर उतरकर नौ–दो–ग्यारह हो गये।

** *** *** **

एक ाास्त्रार्थ में मौलाना सनाउल्ला ने पूछा – 'पण्डितजी! आपके बाट कहाँ गये।' (देहलवी ने एक स्वर्णकार के घर में जन्म लिया था, परन्तु अपनी विद्या, त्याग, तप के बल के आधार पर वे वि वामित्र की भाँति ब्राह्मण बन गये थे)।

पण्डितजी बोले– 'एक दिन अल्लामियाँ का पत्र आया था। लिखा था कि 'देहलवी! तू तो पण्डित बन गया। ये बाट तेरे किसी काम नहीं आएँगे। क़यामत के दिन मुझे आव कता पड़ेगी, अतः इन्हें मेरे पास भेज दो।' मैंने पार्सल करके आपके अल्लामियाँ के पास भेज दिया है।'

** *** *** **

एक ाास्त्रार्थ में मुसलमान हारने लगे तो बोले, 'पण्डित जी! हमें चोटी का विद्वान् नहीं मिला। दो मास प चात् हम यह ाास्त्रार्थ पुनः करेंगे। तब हम चोटी का विद्वान् लायेंगे।' ाास्त्रार्थ का आयोजन हुआ। पण्डित जी ने पूछा– 'इस बार तो आप चोटी का विद्वान् लाये होंगे?' उनके हाँ कहने पर पण्डित जी बोले, 'इनका साफ़ा (पगड़ी) तो हटाकर दिखाओ, इनकी चोटी कहाँ है?' बेचारे ाास्त्रार्थ से पूर्व ही परास्त हो गये।

Be Vegetarian

-J. P. Vaswani

Is it mandatory to turn vegetarian in order to progress on the spiritual path?

Some of the greatest saints were meat-eaters. This proves that a man can reach spiritual heights, even though he is a nonvegetarian. But, there are so many who do not eat meat but they have not put out the fire of passion.

Diet does have a effect on the temperament of man. A number of nonvegetarians have found that on becoming vegetarian, their termperament has changed. They have become more calm and less prone to anger and violent emotions.

All over the world, there is a strong vegan movement going on–vegans say avoid animal food including dairy products. Do you think this is a step forward for vegetarianism?

There are men who realise that animals have not been created as resources for men. They go a step further and keep away from all animal products, including dairy. What is important is that our hearts are filled with the spirit of compassion. When the Buddha was enlightened, he said: "When wisdom came to me, I resolved to defend the weak and to all living things. I gave compassion of my heart."

Vegetarianism is advocated on two grounds - health and environment. What is your view?

The reasons why I chose a vegetarian diet are ethical, philosophical, hygienic, aesthetic and economic. Man has a mystic sense of kinship with all creation, all that lives. This is what makes every life sacred. This is why, I think, eating meat must be condemned as murder of nonhuman creatures.

Meatless Monday is gaining popularity in meat-eating countries. What would you suggest for India? In our country, people observe Monday as Shiva day, Tuesday as Ganesha day, Thursday as Sai Baba Day, and Saturday as Hanuman Day.

A few days ago, the president of the Humane Society of the United States met me in New Jersey. He said to me that his society has been propagating that all men should go meatless on Mondays. I think this should be encouraged because the gradually more and more people will think of the cruelties that are perpetrated upon animals, day after day.

As it is, when food is placed on the dinning table, people take

it as a matter of course and do not think of the cruelties involved in the preparation of food.

What is the relation between vegetarianism and world peace?

Vegetarianism and peace appear to be poles apart. I believe there can be no peace on earth until we stop killing, for the simple reason that if a man kills an animal for food, he will not hesitate in killing a fellow man whom he regards as an enemy. For this reason, the Sadhu Vaswani Mission has started the SAK (Stop All Killing) As sociation to stop all killing.

Do you advocate mock meat?

I do not object if people take mock meat. They get the taste of meat without doing violence to any creature. At the same time, I would wish people to grow in the spirit of compassion and regard all life as sacred.

What is your message to those who are converting from vegetarianism to nonvegetarianism?

With folded hands, I would apeal to them and speak to them of the law of karma according to which he who kills another, kills himself. He who feeds on death, becomes food for death. He, who inflicts suffering upon another, brings suffering to himself.

What is your secular vision of life?

I repeat the vedantic doctrine that one life manifests itself in all creation. It sleeps in stones, dreams in plants, stirs in animals and wakes in men. These stages also serve to indicate that animals are capable of feeling, pain and suffering.

I have stated again and again, we do not have the right to take away that which we cannot give back. I can take away the life of an animal, but I cannot give it back to the animal I have killed. The life of that animal is as precious, as dear to it as my life is to me. Therefore, I have no right to take the life of an animal for any reason–scientific, experimental, appetite or sheer wantonness! Let us, therefore, cultivate 'Cosmic Consciousness'– to commune with the earth-spirit, to have a new feeling for the 'animal' world, for so–called 'lower' animals are also childred of Mother Earth.

BRAHMARPAN ON WEBSITE

IT IS FOR YOUR KIND INFORMATION THAT OUR JOURNAL ***BRAHMARPAN*** IS NOW ALSO AVAILABLE ON THE WEBSITE "www.thearyasamaj.org"

Global Celebration of Yoga: A Report

Summit in China, Festival in Berlin and Camps in Florida. Yoga's popularity is Soaring

What is India's biggest export? No, it's not textiles, gems or jewellery. What is making waves across shores is ancient Indian wisdom. East or west, Yoga is the best, it seems to overtake everything else on the export list. Two major international events are taking place this summer-one in Berlin and another in China.

Dream Come True: China

The China-India Yoga Summit was a veritable mini-UN summit with 1,300 Yoga enthusiasts - 800 from China and the rest from 30 other countries - attending the meet. For three days in June, the Guang Zhou gymnasium reverberated with the voice of the acclaimed Yogacharya BKS Iyengar. Yoga was first introduced here 30 years ago, but in the last five years, there has been a big surge of interest, especially among the young.

There are around 100,000 Yoga teachers in China and one-third of them are followers of Iyengar Yoga. For them, it was a dream come true to meet and learn from the legendary guru. Starting from basics, in three days, the nonagenarian Yogacharya demonstrated all the Asanas, leaving even trained teachers wondering how much more there was to learn from him. His boundless energy was a testimony to the power of Yoga.

Yoga For Peace: Germany

Even as the Yoga Summit concluded in China, prepareations are afoot in Berlin for a global cultural festival marking the 30th anniversary of the Art of Living (AOL) Foundation that has been popularising Yoga, meditation, and Sudarshan Kriya, a special breathing technique, for good health and peace.

"A milestone has been achieved. We are inspired to continue with more enthusiasm and greater speed to realise the dream, where life becomes a celebration and the world, one family", says Sri Sri Ravi Shankar, AOL founder. He will lead a meditation for world peace in Berlin. Over 70,000 people from different countries, religions, traditions and cultures will sit together. Political and business leaders, academicians, NGO representatives and religious and spiritual heads from India and abroad are expected to attend the festival whose theme is 'Celebrating Diversity and Enriching Life'. A Grand Guitar Ensemble for Peace - an enchanting symphony of 2,000 guitarists, 30 Grand pianists and 3,000 choir singers-will be a major attraction. The festival will also have classical music concerts from India and America, contemporary music from Malta, performances by Shaolin monks from China, traditional flautists from Turkey, folk dancers from Russia and Bulgaria and a variety of performances rendered by German artists. Lotus dance from Japan, aboriginal dance from Canada and Swiss groups and Austrian Alpine Horns will vie for audience attention during the two day celebration between July 2 and 3. Four continent-based pavillions - Africa, Asia-Pacific, Americas and Europe - will showcase their cultural heritage, food, dance, music, poetry and literature.

The Olympiastadiun in Berlin, the venue of the mega meet, will be transformed into Europe's biggest participative Yoga park, where visitors can attend Yoga workshops and explore the effect of this ancient science on physical health and inner peace. A unique Yoga museum will chart the evolution of Yoga from its ancient roots to its present-day Avatar and also showcase the impact of Yoga in peace-building.

Delightful Experience: USA

Meanwhile, in the United States, Yogacharya Surakshit Goswami has been conducting Yoga workshops and camps for international participants in major cities, both on the east and west coast, including in Florida and California. The response has been overwhelming, he says.

Tasveermandir Kapoor, temple administrator at the Fremont Hindu Temple says; "For three days we have had a Yog-Shivir or Yoga camp. The way Surakshitji taught us, the way he made all the participants understand the real meaning of each Asana, made the concepts clear to us-everyone felt they had benefited greatly from the sessions. The word "satisfaction" will be too small to describe what was experienced, the word "delighted" would perhaps be a more apt description."

(FORM IV) STATEMENT ABOUT OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT BRAMARPAN.

Place of Publication and Address: New Delhi, C2A/58, Janakpuri, New Delhi-110058.

Periodicity : Monthly, A bi-lingual publication (Hindi and English)

Printers' name, citizenship and Address: B.D. Ukhul, Indian, C2A/58, Janakpuri, New Delhi-110058.

Publishers' name, citizenship and Address: B.D. Ukhul, Indian, C2A/58, Janakpuri, New Delhi-1100058.

Editor's name, citizenship and Address: Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Indian, C2A/90, Janakpuri, New Delhi-110058.

Name and Address of owner: M/s. Brahmasha India Vedic Research Foundation, C2A/58, Janakpuri, New Delhi-110058.

Printing Press: Friends Printofast , 6, A5B/A5C Market, Janakpuri, New Delhi-110058.

DCP License No. F2(B-39) Press/2007

I, B.D.Ukhul, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

31.03.2014 **Sd/- B.D.Ukhul**

Date of Pubn. : 31.03.2014 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 April.2014
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2014-2016

इन्द्रो वि वस्य राजति।
ï नोऽअस्तु द्विपदे ï चतुष्पदे।। (यजु. 36/8।।
ऋषि – दध्यङ्ङथवर्णः देवता–इन्द्रः, छन्द–गायत्री

(इन्द्रः) हे इन्द्र परम ऐ वर्ययुक्त परमात्मा आप संपूर्ण संसार के राजा एवं सर्वप्रका ाक हो और सारे वि व पर ाासन कर रहे हो। हे रक्षक प्रभो! आपकी कृपा से (नः) हमारे (द्विपदे) दो पैर वाले (पुत्र, पौत्र, कलत्र आदि) मानव सुख व आनन्द प्राप्त करें तथा (चतुष्पदे) हाथी, घोड़े, गाय आदि चौपाये भी परम सुख से युक्त हों जिससे हम सब लोग सदा आनंदपूर्वक रहें।

Oh Almighty God, You are the Master of all possessions. You are the sole monarch of the whole universe. It is You, Oh My Lord, by Your grace, may there be felicity and safety for all biped's, that is, our offsprings, relatives, friends and others. You are imparter of bliss! May there be safety for our quadrupeds, that is, our elephants, horses, cows etc. May we in this way be ever happy under Your protection.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58